• बाल कविता...

अजब-अनोखी दुनिया

अजब-अनोखी प्यारी दुनिया,
लगती सबसे न्यारी दुनिया,
इस दुनिया के खेल नवेले,
जीव-जंतु प्यारे अलबेले।
अजब-गजब हैं रंग धरा के,
कैसे खेल खिलाती है,
टीचर कहती गोल है दुनिया,
मुझको चपटी लगती है।
इस दुनिया में कैसे-कैसे,
पशु-पक्षी हैं भरे पड़े,
कोई छोटा कोई मोटा,
जाने कैसे रंग भरे।
लंबी गर्दन है जिराफ की,
ऐसी जैसे हो खंभा,
जंबो हाथी इतना भारी,
लेना मुश्किल है पंगा।

■ निशान्त जैन

आंधी गुस्से वाली है

ठंडी मस्त हवा शर्मीली,
आंधी गुस्से वाली है।
धूल भरे अंधड़ आते हैं
जड़ से पेड़ उखड़ जाते हैं,
गुस्से में नन्हें पौधों की
इसने जान निकाली है।
आंधी में कुछ नहीं सूझता,
कोई कितना रहे जूझता,
हमें डराने को इसने एक
काली बिल्ली पाली है।

■ रमेश तैलंग

• चुटकुले...

टीचर– ये बताओ कि नदी में नींबू का पेड़ लगा है तो उसे कैसे तोड़ोगे?
स्टूडेंट– चिड़िया बनकर।
टीचर– तुम्हें चिड़िया कौन बनाएगा?
स्टूडेंट– जो नदी में नींबू का पेड़ लगाएगा।

रिंकू ने अमरूद लिए तो उसमें से कीड़ा निकला।
रिंकू अमरुद वाले से– इसमें तो कीड़ा है।
अमरुद वाला– ये किस्मत की बात है....क्या पता अगली बार मोटरसाइकिल निकल जाए।
रिंकू–2 किलो ओर दे दो।

• जानकारी...

स्पेस में सैटेलाइट...

अंतरिक्ष की दुनिया रहस्यों से भरी हुई है। लेकिन इन रहस्यों को सुलझाने के लिए अधिकांश देशों की स्पेस एजेंसियां काम कर रही हैं। इतना ही तकनीक बढ़ने के साथ ही स्पेस में सैटेलाइट की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जब सैटेलाइट खराब होती है, या उसका काम पूरा हो जाता है, फिर वो कहां पर गिरती है। क्योंकि स्पेस में ज्यादा कबाड़ नहीं बढ़ाया जा सकता है।

बता दें कि जहां पर भी इंसान रहते हैं, वहां पर कचरा होना आम बात है। वो जमीन हो या स्पेस। जी हां, स्पेस में लगातार सैटेलाइट की संख्या और अलग-अलग ऑपरेशन के कारण कचरों की संख्या बढ़ रही है। लेकिन क्या आपने कभी देखा है कि सैटेलाइट आपके शहर में गिरती है? मतलब ये है कि सैटेलाइट को स्पेस से हटाने के बाद किसी खास जगह पर गिराया जाता है, ऐसा नहीं है कि सैटेलाइट कहीं पर भी गिराया जा सकता है। अंतरिक्ष में बहुत सारे सैटेलाइट मौजूद हैं। लेकिन कई बार सवाल पूछा जाता है कि आखिर ये सैटेलाइट कहां जाता है? जानकारी के मुताबिक अब तक करीब साढ़े 6 हजार कामयाब रॉकेट लॉन्च हुए हैं। अधिकांश देशों ने अंतरिक्ष में अपने-अपने सैटेलाइट भेजे हैं। हालांकि हर सैटेलाइट एक समय के बाद खराब होते हैं या उनका उम्र पूरी हो जाती है। जानकारी के मुताबिक खराब सैटेलाइट के लिए दो विकल्प हैं। खराब सैटेलाइट को कहां पर हटाना है, ये इस बात से तय होता है कि सैटेलाइट धरती से कितनी दूरी पर हैं। अगर सैटेलाइट काफी हाई ऑर्बिट पर है, तो उसमें तकनीकी गड़बड़ी आने के बाद उसे धरती पर लौटाने में काफी ईंधन खर्च हो सकता है। ऐसे में वैज्ञानिक उसे अंतरिक्ष में ही और आगे भेज देते हैं। इसके अलावा खराब सैटेलाइट को धरती पर वापस लाया जाता है। अधिकांश देश अंतरिक्ष में कचरा कम करने के लिए उसे वापस धरती पर लाते हैं। सैटेलाइट को धरती पर लौटाने के बाद उसे एक जगह जमा करना होता है। इसके लिए जिस जगह का इस्तेमाल होता आया है, उसे पॉइंट निमो कहते हैं। बता दें कि निमो शब्द लैटिन भाषा से है, जिसका अर्थ कोई नहीं है। जब किसी जगह को निमो पॉइंट कहा जाता है तो इसका अर्थ है कि वहां कोई नहीं रहता है। ये जगह सूखी जमीन से सबसे दूर की जगह होती है, यानी समुद्र के बीचों बीच की जगह होती है। इसे समुद्र का केंद्र भी माना जाता है। ये जगह दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच स्थित है। इसके अलावा कंबाइंड फोर्स स्पेस कंपोनेंट कमांड इस पर नजर रखता है कि अंतरिक्ष में इंसान क्या कर रहा है। कंबाइंड फोर्स स्पेस कंपोनेंट कमांड ने इसके लिए एक लिस्ट बनाई हुई है। जिसमें अलग-अलग तरह के जंक्स शामिल हैं।

• तेनालीराम

चम्पा और बांस

गतांक से आगे...

एक दिन आसपास कोई फूल नहीं मिले। सिपाही जंगल से फूल लाने गया। जंगल में सिपाही ने देखा बड़े सुन्दर चम्पा फूल लगे हुए थे। चम्पा और बाँस का झाड़ पास-पास उगे हुए थे। सिपाही फूल तोड़ने के लिए जैसे ही नजदीक आया, चम्पा के झाड़ ने कहा 'ए भैया बाँस'-बाँस झाड़ ने कहा 'काय बहिनी चंपा?'

चंपा ने कहा - 'राजा के सिपाही फूलवा तोड़े बर आए दे',

बाँस ने कहा - 'लग जा बहिनी आकाश' - जैसे ही बाँस ने कहा, वैसे ही चम्पा का झाड़ उपर की ओर बढ़ने लगा। सैनिक आश्चर्यचकित होकर ताकते ही रहे।

सैनिक दौड़ते हुए सेनापति के पास पहुँचे और उन्हें सारी बात बताई।'

सैनिकों ने कहा - 'आप एक बार हमारे साथ जंगल चलिये, एक बार खुद देख लीजिए'-

सेनापति बहुत ही डर गए। दौड़ते दौड़ते पहुँचे मन्त्री के पास - अब मन्त्री चल पड़े देखने के लिए।

'ए भैया बाँस' - बाँस ने कहा - 'काय बहिनी चम्पा', चम्पा ने कहा - 'राजा के मन्त्री फूल तोड़े बर आए हे' - 'लग जा बहिनी आकाश'- मन्त्री जी जैसे ही पेड़ तक पहुँचे, पेड़ और ऊपर और भी ऊपर तक पहुँच गया।

मन्त्री जी सीधे पहुँचे राजा के दरबार में। राजा ने कहा - 'इतना घबरा क्यों गये हो?'

मन्त्री ने कहा - 'आप इसी वक्त मेरे साथ चलिए राजा जी' -

सारी बात सुनकर राजा ने कहा - 'मेरी छोटी रानी भी मेरे साथ चलेगी।

छोटी रानी को खबर देने वही दो सिपाही पहुँचे, जिन्होंने उन बच्चों को वहाँ फेंका था। दोनों खूब डर गये थे। छोटी रानी भी डर गई थी।

उधर बड़ी रानी फूल के लिए व्याकुल हो रही थी और सैनिकों को बुला भेजी थी ये जानने के लिए कि वे अब तक फूल क्यों नही लाये। बड़ी रानी, छोटी रानी के महल के पास से गुजर रही थी, उन्हे छोटी रानी और दो सिपाहियों की बात सुनाई दी। राजा और छोटी रानी जब जाने लगे, उनकी सवारी के पीछे-पीछे बड़ी रानी पैदल ही चलने लगी।

चम्पा के झाड़ को ऊपर से सब कुछ दिखाई दे रहा था - जैसे ही वे सब पास पहुंचे

'ए भैया बाँस' - बाँस ने कहा - 'काय बहिनी चम्पा', चम्पा ने कहा - 'छोटी रानी संग राजा फूल तोड़े बर आए हे' - 'लग जा बहिनी आकाश'- चम्पा का झाड़ और भी ऊँचा हो गया।

राजा दोनों पेड़ो के पास पहुँचकर पूछने लगे - 'क्या बात है - तुम दोनों भाई बहिन हो - कैसे चम्पा और बाँस बन गए?' उसी वक्त बड़ी रानी वहाँ तक पहुँची। चम्पा ने जोर से कहा - 'ए भैया बाँस' - बाँस ने कहा - 'काय बहिनी चम्पा', चम्पा ने कहा - 'हमर महतारी, दुखियारी बड़े रानी ह फुलवा तोड़े बर आवथे'- 'परो बहिनी पाँव' - चम्पा जमीन में झुक गई और बड़ी रानी के पैरों के पास झूमने लगी।

साथ-साथ बाँस का झाड़ भी झुककर बड़ी रानी के पैरों को छूने लगा।

इसके बाद चम्पा और बाँस ने राजा को सारी बात बताई। राजा ने उसी वक्त छोटी रानी को बन्द करने को कह दिया अंधेरी कोठरी में और बड़ी रानी से माफी मांगने लगे।

बड़ी रानी बड़े दुख से चम्पा और बाँस को देख रहे थे। ये दोनों मनुष्य कैसे बनेंगे?

बड़ी रानी दोनों के करीब पहुँचकर दोनों से लिपटकर रोने लगी। जैसे ही उनके आँसूओं ने चम्पा और बाँस को छुआ, चम्पा और बाँस मनुष्य बन गये। बेटा, बेटी को बड़ी रानी ने गले से लगा लिया और जाकर रथा में बैठ गई।

राजा रानी दोनों बच्चों के साथ राजमहल की ओर चल पड़े, साथ में बाजा, गाजा बजने लगे। पूरे देश में खुशियाँ फैल गई।

(डा. मृनालिका ओझा)

'ए भैया बाँस' – बाँस ने कहा – 'काय बहिनी चम्पा', चम्पा ने कहा – 'राजा के मन्त्री फूल तोड़े बर आए हे' – 'लग जा बहिनी आकाश'– मन्त्री जी जैसे ही पेड़ तक पहुँचे, पेड़ और ऊपर और भी ऊपर तक पहुँच गया।

मन्त्री जी सीधे पहुँचे राजा के दरबार में। राजा ने कहा – 'इतना घबरा क्यों गये हो?' मन्त्री ने कहा – 'आप इसी वक्त मेरे साथ चलिए राजा जी' – सारी बात सुनकर राजा ने कहा – 'मेरी छोटी रानी भी मेरे साथ चलेगी...

• रोचक...

स्कूल बस का रंग

आपने अक्सर स्कूल बसों को देखा होगा, जो हर जगह पीले रंग की नजर आती हैं, लेकिन क्या कभी मन में ख्याल आया है कि आखिर ऐसा होता क्यों है? स्कूल बस का रंग पीला रखने के पीछे की एक खास वजह है। दरअसल पीला रंग चमकीला रंग होता है और इसे दूर से आसानी से देखा जा सकता है। ये खास रूप से खराब मौसम या बेहद कम रोशनी में भी नजर आ जाता है, जिससे दूसरे वाहन चालकों को स्कूल बस को पहचानने में खासी आसानी होती है। पीला रंग एक चेतावनी का रंग होता है। ये दूसरे वाहन चालकों को सतर्क करता है कि एक स्कूल बस सड़क पर है और उन्हें सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा पीला रंग आमतौर पर खुशी और उत्साह से जुड़ा रंग होता है। बच्चों के लिए स्कूल बस भी एक खुशी का प्रतीक मानी जाती है क्योंकि ये उन्हें उनके दोस्तों और स्कूल की ओर ले जाती है। स्कूल बस का रंग पीला होने के पीछे ये भी एक वजह होती है।

• नीदरलैंड...

नीदरलैंड में एक तरफ क्राइम रेट कम होने पर देश के लिए जहां खुशी की बात है। वहीं जेल प्रशासन के लिए ये चिंता की बात है कि जेल खाली हैं। हालांकि सरकार द्वारा जेलों के रख-रखाव और व्यवस्था पर पूरा खर्च हो रहा है, लेकिन उनका कोई इस्तेमाल नहीं होता है। इस बात को देखते हुए इस देश में कई जेलों को प्रशासन ने रेस्टोरेंट में तब्दील कर दिया है। जेलों के अंदर ही बड़े-बड़े रेस्टोरेंट खुल चुके हैं और जेल प्रशासन इन्हें चला रहे हैं।